रहीम ग्रंथावली

(नगर शोभा)

रहीम

कविता

रहीम ग्रंथावली

नगर शोभा

रहीम

नगर शोभा

भाग 2

आदि रूप की परम दुति, घट-घट रहा समाइ।
लघु मति ते मो मन रसन, अस्तुति कही न जाइ ।।1।।

नैन तृप्ति कछु होतु है, निरखि जगत की भाँति।
जाहि ताहि में पाइयै, आदि रूप की काँति ।।2।।

उत्तम जाती ब्राह्मनी, देखत चित्त लुभाय।
परम पाप पल में हरत, परसत वाके पाय ।।3।।

परजापति परमेश्वरी, गंगा रूप-समान।
जाके अंग-तरंग में, करत नैन अस्नान ।।4।।

रूप-रंग-रति-राज में, खतरानी इतरान।
मानों रची बिरंचि पचि, कुसुम कनक मैं सान ।।5।।

पारस पाहन की मनो, धरै पूतरी अंग।
क्यों न होई कंचल पहू, जो बिलसै तिहि संग ।।6।।

कबहुँ दिखावै जौहरिन, हँसि हँसि मानिक लाल।
कबहूँ चख ते च्वै परै, टूटि मुकुत की माल ।।7।।

जद्यपि नैननि ओट है, बिरह चोट बिन घाइ।
पिय उर पीरा ना करै, हीरा सी गड़ि जाइ ।।8।।

कैथिनी कथन न पारई, प्रेम-कथा मुख बैन।
छाती ही पाती मनो, लिखै मैन की सैन ॥9॥

बरूनि-बार लेखनि करै, मसि काजरि भरि लेइ।
प्रेमाखर लिखि नैन ते, पिय बाँचन को देह ॥10॥

चतुर चितेरिन चित हरै चख खंजन के भाइ।
द्वै आधौ करि डारई, आधौ मुख दिखराइ ॥11॥

पलक न टारै बदन तें, पलक न मारै नित्र।
नेकु न चित तें ऊतरै, ज्यों कागद में चित्र ॥12॥

सुरंग बरन बरइन बनी, नैन खवाये पान।
निसि दिन फेरै पान ज्यों, बिरही जन के प्रान ॥13॥

पानी पीरी अति बनी, चंदन खौरे गात।
परसत बीरी अधर की, पीरी कै ह्वै जात ॥1411

परम रूप कंचन बरन, सोभित नारि सुनारि।
मानों साँचे ढारि कै, बिधिना गढ़ी सुनारि ॥15॥

रहसनि बहसनि मन हरै, घेरि घेरि तन लेहि।
औरन को चित चोरि कै, आपुन चित्त न देहि ॥16॥

बनिआइन बनि आइ कै, बैठि रूप की हाट।
पेम पेक तन हेरि कै, गरुए टारत बाट ॥17॥

गरब तराजू करत चख, भौंह मोरि मुसक्यात।
डाँड़ी मारत बिरह की, चित चिन्ता घटि जात ॥18॥